अध्यात्म रहस्य

दोहा– आए थे इक धाम से , उतरे एक ही घाट।
हवा लगी संसार की , हो गए बारह बाट।।

तर्ज़– छोड़ गए बालम ... ...

छोड़ दिया बंदे क्यों ध्यान लगाना छोड़ दिया।। टेक

हम कहते है कि अंदर देखो बाहर मत झांको ।
मन मूरख को गुरु शब्द से कान पकड़ कर हांको।।

पांच पचीसों मिलकर तेरे घर की संपत्ति लूटी।
शब्द सुर्त की डोर जो बाँधी वो रस्ते में टूटी।।

नौ दरवाज़े बंद कर प्यारे दसवें सहज समाओ।
जगमग जोत जगे घट भीतर तांका दर्शन पाओ।।

गगनमंडल मे तारे चमके झिलमिल – झिलमिल जोती।
घंटा शंख बाँसुरी वीणा प्रेम से आरती होती।।

" दासनदासा" गुरु का लेकर शब्द संदेशा जाना।
आना जाना तभी मिटेगा घट में मिले ठिकाना।।